समाजशास्त्रीय सिद्धांत: नव–प्रकार्यवाद

(Sociological Theory: Neo–Functionalism)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

प्रकार्यवाद की कमियाँ

- प्रकार्यवाद व्यक्तिवाद का विरोध करता है, समाज तथा संरचना को ज्यादा प्रमुखता प्रदान करता है।
- प्रकार्यवाद क्रिया पर अधिक बल देता है।
- यह सामाजिक परिवर्तन के स्थान यथास्थितिवादिता को महत्व देता है।
- यह समाज का एकपक्षीय अध्ययन करता है।
- प्रकार्यवाद सहयोगी प्रक्रिया पर विशेष ज़ोर देता है तथा संघर्ष को नजरंदाज करता है।

यद्यपि नव–प्रकार्यवाद इन कमियों को दूर करने का प्रयास करता है, लेकिन इसके बावजूद नव–प्रकार्यवाद अभी भी एक सिद्धांत के रूप में विकसित न होकर केवल एक विचारधारा के रूप में जाना जाता है।

नव–प्रकार्यवाद (Neo–Functionalism)

- सन् 1960 में प्रकार्यवाद की अनेकों आलोचनाएँ हुईं तथा इसके प्रमुख बिंदुओं के रूप में कहा गया कि यह सिद्धांत समाज में होने वाले सामाजिक परिवर्तन, संरचनात्मक विरोधाभासों तथा संघर्षों को महत्व नहीं देता है।
- इस सिद्धांत की जैविकीय उपमा ने इसे रूढ़िवादी बना दिया।
- इन आलोचनाओं के आधार पर प्रकार्यवादी सिद्धांत को मतैक्यवादी (Consensus) सिद्धांत कहने का चलन हो गया।
- सन् 1970 तथा 1980 के दशकों में सामाजिक घटनाओं की व्याख्या तथा समझ की एक विचारधारा के रूप में प्रकार्यवाद का लोप हो गया।
- इस प्रकार्यवाद को पुनर्जीवित करने का प्रयास ही नव–प्रकार्यवाद है।

नव–प्रकार्यवाद

- 1980 के दशक के दौरान पारसन्स के विचारों के प्रति विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ। कुछ विद्वानों ने इसे 'पारसन्स की पुनःखोज' का चरण कहा।
- इसी दिशा में पारसन्स के प्रकार्यवाद का पुनरुत्थान पहले जर्मनी में हुआ, तत्पश्चात् अमेरिका में हुआ।
- 1984 में अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोशिएशन के सिद्धांत सत्र में नव–प्रकार्यवाद पर ध्यान आकृष्ट हुआ। इस सत्र के अध्यक्ष अलेक्ज़ेंडर थे।
- 1985 में जेफ्रे सी. अलेक्ज़ेंडर द्वारा 'नव–प्रकार्यवाद' शब्द का प्रयोग किया गया, जिसका उद्देश्य पारसन्स के सिद्धांत पर विचार करना तथा उसे संशोधित करना था।
- नव–प्रकार्यवाद ने प्रकार्यवाद के मूल सिद्धांत के मौलिक प्रस्तावों की समीक्षा की।
- नव–प्रकार्यवाद ने अनेक अन्य सिद्धांतों के पहलुओं को भी शामिल किया, जिनमें से कुछ के प्रकार्यवाद से परस्पर विरोधी संबंध थे।

नव–प्रकार्यवाद

- अमेरिका में जेफ्रे सी. अलेक्ज़ेंडर व पॉल कोलोमी, जर्मनी में निकलास लुहमान तथा ब्रिटेन में मार्क्सवाद को संशोधित रूप में प्रस्तुत करने वाले जी. ए. कोहेन की प्रेरणाओं से नव–प्रकार्यवाद का जन्म हुआ।
- इन विद्वानों के अलावा रिचर्ड मंच, नील स्मेलसर, मार्क गुल्ड एवं जॉर्ज रिट्ज़र भी नव–प्रकार्यवादी विचारधारा से संबंधित हैं।
- नव–प्रकार्यवाद को निम्न समस्याओं पर नियंत्रण करने की आवश्यकता है –
  - व्यक्तिवाद–विरोधी
  - परिवर्तन के प्रति द्वेष
  - रूढ़िवाद
  - आदर्शवाद
  - आनुभाविक विरोधी पक्षपात

नव–प्रकार्यवाद की विशेषताएँ

- यह समाज के बहुपक्षीय अध्ययन पर बल देता है।
- यह सहयोगी प्रक्रिया के साथ–साथ असहयोगी प्रक्रिया के अध्ययन पर भी बल देता है।
- नव–प्रकार्यवाद प्रजातांत्रिक है जबकि प्रकार्यवाद अभिजनवादी है क्योंकि यह निरंतरता की बात करता है।
- नव–प्रकार्यवाद आधुनिकता के साथ–साथ तार्किकता पर भी बल देता है।
- यह पारसन्स के विचारों का विरोध करता है।
- नव–प्रकार्यवाद संघर्ष पर भी बल देता है।
- यह माइक्रो तथा मैक्रो दोनों का विश्लेषण करता है।
- यह प्रकार्यवादी परंपरा का एक नवीन समाजशास्त्रीय पुनर्निर्माण है।
- नव–प्रकार्यवाद के अनुसार सभी विज्ञानों को आनुभविकता एवं तार्किकता के अवधारणा पर निष्कर्ष निकालना चाहिए।

जेफ्रे सी. अलेक्ज़ेंडर

- *Neofunctionalism*, 1985
- अमरीकी समाजशास्त्री जेफ्रे सी. अलेक्ज़ेंडर को नव–प्रकार्यवाद का जनक माना जाता है।
- नव–प्रकार्यवाद के बारे में अलेक्ज़ेंडर स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यह कोई विकसित सिद्धांत नहीं है, अपितु एक प्रवृत्ति मात्र है।
- नव–प्रकार्यवाद के बारे में कहा जाता है कि बोतल वही है, सिर्फ फ्लेवर परिवर्तित हुआ है। इसलिए इसे एक सिद्धांत न मानकर केवल एक विचारधारा माना जाता है।

प्रमुख पुस्तकें

- *Theoratical Logic in Sociology* (4 Vol.), 1982–83
- *Neofunctionalism*, 1985
- *Twenty Lectures: Social Theory Since World War II*, 1989
- *Durkheimian Sociology*, 1988
- *Action and Its Environments*, 1988
- *Neofunctionalism and Beyond*, 1998

अलेक्ज़ेंडर ने स्पष्ट रूप में कहा है कि सामाजिक घटनाओं की व्याख्या का यह एक उपागम है, जिसमें सामाजिक जीवन के उपेक्षित पक्षों पर ध्यान आकर्षित किया जाता है।

जेफ्रे सी. अलेक्ज़ेंडर

- अलेक्ज़ेंडर मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित रहे हैं इसलिए इनकी गणना नव–प्रकार्यवादी के साथ–साथ नव वामपंथी मार्क्सवादी के रूप में भी की जाती है।
- अलेक्ज़ेंडर तथा कोलोमी लिखते हैं, *'यह प्रकार्यवादी सिद्धांत की आत्म आलोचनात्मक धारा है जो इसकी सैद्धांतिक आत्मा को बनाए रखते हुए प्रकार्यवाद के बौद्धिक क्षेत्र में विस्तार करना चाहती है।'*
- अलेक्ज़ेंडर नव–प्रकार्यवाद की व्याख्या समाज के ऐसे रूप में करते हैं, जिसमें समाज विभिन्न तत्वों या इकाइयों से बना है तथा इसमें एक की पारस्परिक क्रियाएँ दूसरे के साथ संबंधित होकर एक विशेष प्रणाली बना लेती है।
- समाज की पारस्परिक क्रियाएँ स्वतंत्र रूप से अनेक कारकों द्वारा निर्धारित होती हैं। अलेक्ज़ेंडर व्यक्तिवाद पर बल देते हैं।
- अलेक्ज़ेंडर का मत है कि जब व्यक्ति किसी क्रिया को करता है तो या तो वह व्यवस्था के मानक को स्वीकार करने के लिए करता है या उसे वह क्रिया उपयोगी लगती है।
- अलेक्ज़ेंडर के विचार से नव–प्रकार्यवाद क्रिया तथा व्यवस्था दोनों को समान रूप से महत्व देता है।

जेफ्रे सी. अलेक्ज़ेंडर

अलेक्ज़ेंडर ने नव–प्रकार्यवाद की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया –

- स्वतंत्र एवं बहुआयामी (Micro & Macro) दृष्टिकोण
- क्रिया तथा व्यवस्था दोनों को समान महत्व
- वामपंथी झुकाव
- प्रजातांत्रिक विश्लेषण
- संतुलन व संघर्ष दोनों को महत्व
- रचनात्मकता
- प्रत्यक्षवाद का विरोध (उत्तर प्रत्यक्षवादी)

निकलास लुहमान

- *The Differentiation of Society*, 1982
- जर्मन समाजशास्त्री लुहमान ने प्रकार्यवाद के संशोधन में दो अवधारणाएँ प्रस्तुत की –
  - आत्मनिर्देशन (Self–Reference)
  - जटिलता (Complexity)
- *Risk: A Sociological Theory*, 1993
- इस पुस्तक में लुहमान, पारसन्स के प्रकार्यवाद के प्रति अपनी अस्वीकृति व्यक्त करते हैं।
- आज की दुनिया इतनी अधिक पेचीदी है कि इसमें सामान्य मूल्यों व मानकों में कोई साझेदारी हो ही नहीं सकती। यहाँ अनेक सामाजिक व्याधियाँ व विघटन व्याप्त हैं। ऐसे में पारसन्स ने कैसे मान लिया कि इस विशाल समाज में सर्वसम्मति/ मतैक्य (Consensus) होगा।

Next Class:

समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संरचनावाद I

(Sociological Theory: Structuralism I)